भगवान पार्श्वनाथ जी का अतिशय क्षेत्र कमठाण

क्षेत्र परिचय- जैन धर्म भारतवर्ष का अत्यन्त प्राचीन धर्म है। क्राईस्ट के जन्म से चार सौ साल पहले मौर्य सम्राट् चक्रवर्ती चन्द्रगुप्त को कर्नाटक प्रान्त के श्रवणबेलगोला ने मानसिक शुद्धि के लिए आश्रय देकर जीवन रक्षण किया।

जैन धर्म बाहर के ठाट-बाट से ऊपर उठकर भीतरी शुद्धि को महत्व देने वाला भारत भूमि का प्राचीन धर्म है। यह धर्म उत्तर भारत में जन्म लेकर सारे संसार को अहिंसा का संदेश देता है। दक्षिण भारत में कर्नाटक ने जैन धर्म का डंका बजाकर प्रसार किया। कर्नाटक का इतिहास इसका गवाह है। जैन धर्म का मूल तत्व, अहिंसा का पालन तथा आत्म दर्शन है।

कर्नाटक का मुकुट स्थान बीदर जिला धर्मसमन्वय का संगल स्थान है। यहाँ अलग-अलग धर्म के मंदिर, गुरुद्वारे, मस्ज़िद, बुद्धस्तूप तथा जैनों के चैत्यालय भी हैं। बीदर जिले के बहुत से गांवों में आज भी जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ पाई जाती हैं।

बीदर केन्द्र स्थान से 11 किमी. की दूरी पर कमठाण ग्राम के पश्चिम दिशा की ओर भगवान पार्श्वनाथ जी का अति प्राचीन मंदिर है। बसवकल्याण तालुके के मिरखल, हुमनाबाद तालुका के केन्द्र स्थान पर पुरातन जैन मंदिर आज भी मौजूद है। भाल्की, औरादनगर में भी जैनों के जीर्ण-शीर्ण मंदिर और मूर्तियाँ पाई जाती हैं। बीदर से 18 किमी. की दूरी पर स्थित काडवाद ग्राम में सिद्धेश्वर मंदिर के बाहरी प्रांगण में आज भी भगवान महावीर जी की मूर्ति हमें देखने को मिलती है।

कमठाण, बीदर जिले का एक बड़ा गांव हैं इस गांव का इतिहास कर्नाटक के प्राचीन इतिहास से जुड़ा हुआ है। रट्ट वंश के राज्यभार के समय में यह एक बहुत बड़ा खेड़ा (गांव) था। कमठाण आज बीदर जिले का एक बड़े गांव के रूप में जाना जाता है। इस ग्राम के रास्ते में कर्नाटक का बहुत बड़ा पशु वैदकीय महाविद्यालय बसा हुआ है। पुरातन काल के इस ऐतिहासिक गांव में पुरातन विट्ठल मंदिर, वीर शैवों का पुरातन मठ तथा ग्यारहवीं शताब्दी के भगवान पार्श्वनाथ जी का मंदिर देखने को मिलता है।

1100 साल पुराना यह रट्ट राजवंश के राजा द्वारा निर्मित जैनों के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ जी की ध्यान मग्न पद्मासन की 4 फुट ऊँची काले पाषाण की नयन मनोहर सुन्दर मूर्ति आज भी दर्शनार्थियों को जैन धर्म का अहिंसा संदेश मौन व्रत से दे रही है, देखने वालों को ऐसा प्रतीत होता है कि साक्षात् तीर्थंकर मौन व्रत धारण कर तपस्या में जीवंत बैठे हुए हैं। देखने में सुन्दर और मुग्ध मूर्ति अगर कोई देखने आए तो सामने से हिलने का नाम नहीं लेता। करीब डेढ़ एकड़ की विशाल पटस्थल पर स्थित यह अतिशय क्षेत्र यात्रियों का यात्रा स्थल बन गया है। इस पुण्य परिसर में 35 आम के वृक्ष यात्रार्थियों को ठंडी हवा प्रदान कर छांव देने को तत्पर हैं। वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर दिशा का प्रवेश द्वार बड़ा ही शुभकारी होता है, यह जानकर उत्तर दिशा के सड़क और महाद्वार का निर्माण कार्य पंचकमेटी ने अपने हाथ में लेकर सड़क का काम पूरा किया। अब केवल महाद्वार का काम होना बाकी है। पूर्व में भी एक महाद्वार है। मंदिर के सामने 35 फुट ऊँचा मानस्तम्भ बहुत ही मनमोहक एवं सुन्दर है।

भगवान पार्श्वनाथ जी के गर्भगृह के नीचे एक गुफा है। उस गुफा को अच्छी ढंग से मरम्मत करके वहाँ पर काँच का सुन्दर काम करवाया गया है। यहाँ पर बैठकर ध्यान करने से मन को शान्ति मिलती है, इसीलिए इसे ध्यान मंदिर के नाम से जाना जाता है।

भगवान पार्श्वनाथ जी के गर्भगृह तथा शिखर में भी बड़े ही सुन्दर ढंग से काँच का काम करवाया गया

है।

यहाँ पर भगवान पार्श्वनाथ जी का प्रतिदिन पंचामृत अभिषेक कराया जाता है। इसके लिए एक शाश्वत पूजा निधि का आयोजन किया जाता है, जिसमें करीब 400 सदस्य हैं। अभी भी सदस्यता अभियान जारी है। सदस्यता शुल्क 501/- रुपया है।

यहाँ पर पहले जैनों की पाठशाला और छात्रावास था, ऐसा लोग कहते हैं तथा उस गुरुकुल में विद्या प्राप्त बहुत से लोग अभी भी बीदर जिले में मिलते हैं। अत: वैसा ही छात्रावास कमठाण अतिशय क्षेत्र परिसर में पुन: स्थापित करके नि:सहाय जैन बच्चों को विद्या दान करने हेतु पंच कमेटी ने निर्णय लेकर 'श्रुतज्ञान छात्रावास' नाम से एक छात्रावास निर्माण करने का संकल्प लेकर उसके लिए स्केच तैयार कराकर, एस्टीमेट भी बनवाया, दानियों की राह ताकते बैठे पंच कमेटियों का सपना जल्दी पूरा होगा, ऐसी आशा की जाती है।

यहाँ पर 200 लोगों के बैठने की व्यवस्था वाला एक सुन्दर प्रवचन मंदिर और एक 500 व्यक्तियों की क्षमता वाले सभागृह का निर्माण कार्य भी पूरा हो गया है। अगर दानियों का उदार हस्त का दान मिलता रहा तो यहाँ की पंच कमेटी कुछ ही समय में आधे-अधूरे सभी काम पूर्ण करके इसे एक प्रेक्षणीय स्थान तथा जैनियों का पवित्र यात्रा स्थान बनाने में देर नहीं लगायेगी।

यह मूर्ति 1989 फरवरी तक जमीन में बनी गुफा में थी, जिसे परम पूज्य आचार्य श्री 108 श्रुत सागर मुनि महाराज जी ने गुफा के ऊपरी भाग में एक सुन्दर संगमरमर की वेदी बनवाकर उस पर माघ शुक्ल 5, 1989 को प्रतिष्ठापित करवाया। तब से इस मूर्ति की प्रभावना और बढ़ गई है। हमेशा यात्रार्थी आकर दर्शन लाभ लेकर जाते हैं। हर साल यहाँ पर माघ शुक्ल 5 से माघ शुक्ल 7 तक तीन दिन बड़े हर्षोल्लास से वार्षिक रथयात्रा महोत्सव मनाया जाता है। आन्ध्र, महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्यों से हजारों की संख्या में यात्रार्थी इस अवसर पर आकर पुण्य प्राप्ति के भागीदार बनते हैं। बीदर नगर के तथा पूरे जिले का जैन समुदाय एक जुट होकर इस क्षेत्र की उन्नति के लिए रात-दिन मेहनत कर रहा है। यहाँ पर यात्रार्थी और दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए विश्रान्तीगृह, भोजनगृह, पकवानगृह, शौचालय और पानी की सुविधा की गई है। इस गांव में जैनियों के सिर्फ दो ही परिवार बसे हुए हैं। जो मंदिर को यथासम्भव स्वच्छ तथा सुव्यवस्थित रखने की पूरी कोशिश कर रहे हैं और आए दर्शनार्थियों की यथा-योग्य सेवा और सुविधा उपलब्ध कराते हैं।

यह क्षेत्र दर्शनार्थियों को शान्ति देकर शान्ति-साधना, अहिंसा व्रत पालन से अपने जीवन, राज्य, राष्ट्र यथा विश्व का कल्याण करने का संदेश देता है। इसीलिए यह क्षेत्र कहता है कि शान्ति और अहिंसा के पुजारियों! एक बार इधर मुड़कर देखो। शान्ति की तपोनदी यहाँ बह रही है, भ्रवान पार्श्वनाथा शान्ति जप के लिए यहाँ आपको बुला रहे हैं। आओ, और शान्ति का अमृत पीकर जाओ।

-जिनेन्द्र एन. टिक्के, अध्यक्ष